प्रातः क्लास 28/12/68 ओम शान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। क्या नई बात समझाते हैं। बच्चे सुनते तो रहते हैं यह जो ऊपर में जाने वाले हैं जिसको ऐसट्रोनॉट्स कहते हैं। अभी तुम अपन को आत्मा जानते हो और तुम्हारा बाप आकर तुम आत्माओं को सिखलाते हैं। वह तो सिर्फ़ मून तक जाने की ट्राय(कोशिश) करते हैं। कितना खर्चा करते हैं, बहुत डर रहता है ऊपर जाने में। अभी तुम अपने ऊपर विचार करो तुम कहां के रहने वाले हो। वह तो चन्द्रमा तरफ जाते हैं। तुम तो सूर्य चाँद से भी पार जाते हो एकदम मूलवतन में। वह लोग जो ऊपर में जाते हैं उन्हों को बहुत पैसे आदि मिलते हैं। ऊपर में चक्र लगाने की उनको लाखों रूपये की परजेन्ट मिलती है। शरीर की जोखम उठाई जाती है। वह है सायंस का घमण्ड। तुम जानते हो हम आत्माएँ अपने शान्तिधाम जाते हैं। तो तुम्हारा है सायलेन्स का घमण्ड। आत्मा ही सभी कुछ करती है। उनकी भी आत्मा शरीर के साथ ऊपर में जाती है। बड़ा खौपनाक है। डरते भी हैं ऊपर से गिरे तो जान खत्म हो जावेंगे। वे सभी हैं जिस्मानी हुनर। तुमको बाप रूहानी हुनर सिखलाते हैं। इस हुनर सीखने से तुमको कितनी बड़ी प्राइज मिलती है। 21 जन्म की प्राइज मिलती है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। आजकल गवर्नमेंट लॉट्रियाँ भी निकालती है ना। यह बाप तुमको क्या प्राइज देते हैं और क्या सिखलाते हैं? तुमको बिल्कुल ऊपर ले जाते हैं। जहां तुम्हारा घर है। अभी तुमको याद आया ना कि हमारा घर कहां है और राजधानी जो गवाई है वह कहां है। रावण ने छीन ली थी। अब फिर से हम अपने असली घर भी जाते हैं और राजाई भी पाते हैं। मुक्तिधाम हमारा घर है। यह किसको भी पता नहीं है। अभी तुम बच्चों को सिखलाने लिये देखो बाप कहां से आते हैं। कितना दूर से आते हैं आत्मा भी रॉकेट है ना। वह कोशिश करते हैं ऊपर जाकर देखे चन्द्रमा में क्या है, स्टार में क्या है। तुम बच्चे जानते हो यह तो इस माण्डवे के बतियां हैं। जैसे माण्डवे में बिजलियां लगाते हैं ना, म्युजियम में भी बिजलियों की चकमक करते हो ना। यह फिर है बेहद की दुनियां। इसमें यह सूर्य, चाँद, सितारे रोशनी देने वाले हैं। मनुष्य फिर समझते हैं सूर्य–चन्द्रमा यह देवताएं हैं; परन्तु यह देवता तो है नहीं। अभी तुम समझाते हो बाप कैसे आकर हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। यह ज्ञान सूर्य और ज्ञान चन्द्रमा और ज्ञान लकी सितारे हैं। ज्ञान से ही तुम बच्चों की सद्गति होती है। तुम कितना दूर जाते हो। बाप ने ही घर जाने का रास्ता बताया है। सिवाय बाप के और कोई भी वापिस घर जा नहीं सकते। बाप जब आकर के शिक्षा देते हैं तब तुम जाते हो। यह भी समझते हो हम आत्मा पवित्र बनेंगे तब ही अपने घर जा सकेंगे। फिर या तो योग बल से या मोचरे बल से पावन बनना है। बाप तो समझाते रहते हैं जितना बाप को याद करेंगे उतना ही तुम पावन बनेंगे। याद न करेंगे तो पतित ही रह जावेंगे, फिर बहुत सजाएँ खानी पड़ेंगी और फिर पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। बाप खुद बैठ तुमको समझाते हैं तुम ऐसे2 घर जा सकते हो। ब्रहमाण्ड क्या है, सूक्ष्मवतन क्या है कुछ भी पता नहीं है। स्टुडेन्ट्स पहले थोड़े ही कुछ जानते हैं। जब पढना शुरू करते हैं तो फिर नॉलेज मिलती जाती है। नॉलेज भी कोई छोटी कोई बड़ी होती है। आई0सी0एस0 का इम्तहान दिया फिर कहेंगे नालेजफुल। बस। इससे ऊँच नालेज और कोई नहीं। अब तुम यह कितनी ऊँच नॉलेज सीखते हो। बाप तुमको पवित्र बनने की युक्ति बताते हैं। बच्चों मामेकं याद करो तो तुम पतित से पावन बनेंगे। असल में तुम आत्माएं पावन थे। ऊपर अपने घर में रहने वाले थे। जब तुम सतयुग जीवनमुक्ति में हो तो बाकी सभी मुक्ति में रहते हैं। मुक्ति और जीवनमुक्ति दोनों को हम शिवालय कह सकते हैं। मुक्ति में शिवबाबा भी रहते हैं। हम बच्चे आत्माएँ भी रहते हैं तो वह साइंस के जिड़य क्या2 करते रहते हैं। वह है जिस्मानी हाईयेस्ट नॉलेज। यह फिर है हाईयेस्ट रूहानी नॉलेज। वह कहते हैं सूर्य–चाँद के ऊपर जाकर रहेंगे। कितना माथा मारते हैं। बहादुरी दिखलाते हैं। इतने मलटी मिलियन माईल्स ऊपर में जाते हैं। टाइम पूरा रखा हुआ है। जब ...नकी आस पूरी न होगी और तुम्हारी आस पूरी हो जावेगी। उनका झूठा जिसमानी घमण्ड, तुम्हारा है रूहानी घमण्ड। माया की बहादुरी कितनी दिखलाते हैं। मनुष्य कितने ताली बजाते हैं। बाधाइयाँ देते हैं। मिलता भी बहुत है। करके 5/10 करोड़

मिलेंगे। अभी तुम बच्चों को तो यह ज्ञान है कि इन्हों को यह जो पैसे आदि मिलते हैं सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी 7/8 वर्ष सो सात/आठ दिन ही समझो। आज क्या है, कल क्या होगा। आज तुम नर्कवासी हो कल तुम स्वर्गवासी बन जावेंगे। टाइम कोई जास्ती नहीं लगता है। तो उन्हों की है जिस्मानी ताकत और तुम्हारी है रूहानी ताकत जो सिर्फ़ तुम्हीं जानते हो। वह जिस्मानी ताकत से कहां तक जावेंगे। सूर्य–चाँद तक पहुँचेंगे और लड़ाई शुरू हो जावेगी, फिर सभी खत्म हो जावेंगे। उन्हों का हुनर यहां तक ही खत्म हो जाता है। वह है जिस्मानी हाईयस्ट हुनर, तुम्हारा है हाईयस्ट रूहानी हुनर। तुम मूलवतन शांतिधाम में जाते हो उनका नाम ही है स्वीटहोम। वह लोग ऊपर में जाते हैं साथ में सभी कुछ ले जाते हैं। बहादुरी से जाते हैं। कितने मल्टी मिलीयन्स माईल ऊपर में जाते हैं। और तुम अपना हिसाब करो तुम कितने माईल्स ऊपर में जाते हो। तुम कौन? आत्माएँ। बाप कहते हैं मैं कितना माईल्स ऊपर में रहता हूँ। गिनती कर सकेंगे? उन्हों के पास तो गिनती है, बतलाते हैं इतने माईल्स ऊपर में गये। फिर लौट आते हैं। बड़ी खबरदारी रखते हैं ऐसे उतरेंगे यह करेंगे। बहुत आवाज होता है। तुम्हारा क्या आवाज होगा। तुम कहां जाते हो, फिर कैसे आते हो कोई को पता नहीं। तुमको क्या प्राइज मिलती है। यह भी तुम्हीं जानो। वन्डरफुल है ना। बाबा की कमाल है। किसको पता नहीं। तुम तो कहेंगे यह नई बात थोड़े ही है। हर 5000 वर्ष बाद। वह अपनी यह प्रैक्टिस करते रहेंगे। तुम इस सृष्टि रूपी ड्रामा के आदि–मध्य–अन्त ड्यूरेशन आदि को अच्छी रीत जानते हो। तो तुमको कितना नशा रहना चाहिए। बाबा हमको क्या सिखलाते हैं। बहुत ऊँचा पुरूषार्थ करते हैं फिर भी करेंगे। यह सभी बातें और कोई नहीं जानते। बाप है गुप्त। तुमको कितना राज़ समझ(ा)ते हैं। तुमको कितनी नॉलेज देते हैं। उन लोगों को जानना है हद तक। तुम तो बेहद में जाते हो। वह चन्द्रमा तक जाते हैं। अभी वह तो बड़े2 बत्तियां हैं और तो कुछ है नहीं। उनको धरती नीचे बहुत छोटी देखने में आती है। तो उन्हों की है जिस्मानी नालेज, और तुम्हारी है रूहानी नालेज। कितना फर्क है। तुम्हारी आत्मा कितनी छोटी है; परन्तु रॉकेट बहुत तीखा है। आत्माएं ऊपर ब्रह्माण्ड में रहते हैं फिर आते हैं पार्ट बजाने। यहां तुम्हारी आत्मा भृकुटि के बीच में रहते हैं। सितारे मिसल है। बाप जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं वह भी सुप्रीम आत्मा है भला उनकी पूजा कैसे हो। भक्ति भी जरूर होनी ही है। बाप ने समझाया है आधा कल्प है ज्ञान से दिन। आधा कल्प है भक्ति से रात। अभी संगमयुग पर तुम ज्ञान लेते हो। सतयुग में तो यह ज्ञान होता ही नहीं। इसलिये उनको पुरूषोत्तम संगम युग कहा जाता है। सभी को पुरूषोत्तम बनाते हैं। तुम्हारी आत्मा कितनी दूर–2 जाती है। तुमको खुशी है ना। वह हुनर दिखाते हैं तो कहां से 10/20 हजार मिले। भल कितना भी मिले; परन्तु तुम समझते हो ... कुछ भी साथ चलना नहीं है। अभी मरे कि मरे। सभी खत्म हो जाने वाले हैं। अभी तुमको कितने वेल्युएबुल रत्न मिलते हैं। इनकी वेल्यु को कर न सके। लाख–2 रूपया एक–एक वरशन्स का है। कितना समय से तुम सुनते आते हो। गीता में कितनी वल्युएबुल नॉलेज है। यह एक ही गीता है जिसको मोस्ट वेल्युएबुल कहते हैं। सर्व शास्त्रमई शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता है। वह लोग भल पढ़ते रहते हैं; परन्तु अर्थ थोड़े ही समझते हैं। गीता पढ़ने से क्या होगा। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बनेंगे। भल वह गीता पढ़ते हैं; परन्तु एक का भी बाप से योग नहीं। बाप को ही सर्वव्यापी कह देते। पावन भी बन नहीं सकते। अभी यह (ल0ना0) चित्र तुम्हारे सामने हैं, तुम जानते हो यह विश्व की मालिक हैं। है तो मनुष्य ... ना; परन्तु इन्हों को देवता कहा जाता है क्योंकि दैवीगुण हैं। अभी बाप तुमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। आत्माओं को पवित्र बन सभी को अपने घर जाना है। नई दुनियां में तो इतने मनुष्य होते ही नहीं। बाकी सभी आत्माओं को जाना पड़ेगा अपने घर। इस ज्ञान को सिवाय तुम बच्चों के और कोई समझ नहीं सकते। जो बाप तुमको समझाते हैं। मनुष्य तो वन्डर वन्डर कहते रहते हैं। तुमको बाप यह वन्डरफुल नालेज देते हैं जिससे तुम मनुष्य से देवता बहुत ऊँच बनते हो। तो ऐसी पढ़ाई पर इतना अटेन्शन भी देना चाहिए ना। यह भी समझते हैं जैसा–2 जिसने कल्प पहले अटेन्शन दिया है ऐसा देते रहेंगे। मालूम पड़ता रहता है। बाप सर्विस का समाचार सुनकर खुश भी

होती है। बाप को चिट्ठी ही नहीं लिखते हैं तो समझते हैं उनका बुद्धि योग कहां ठिक्कर–भित्तर तरफ लग गया है। देहअभिमान आया हुआ है। बाप को भूल गये हो। नहीं तो विचार करो लव मेरिज होती है तो उनका कितना आपस में प्यार रहता है। हाँ कोई2 की ख्यल मिट जाती है तो फिर मार भी डालते हैं। यह तुम्हारी है उनके साथ लवमैरेज। बाप आकर तुमको अपना परिचय देते हैं। तुम आपे ही परिचय नहीं पाते हो। बाप को आना पड़ता है। बाप आवेगा तब जबकि दुनियां पुरानी होगी। पुरानी दुनियां को नई बनाने जरूर संगम पर ही आवेंगे। बाप की ड्यूटी है नई दुनियां स्थापन करने की। तुमको स्वर्ग का मालिक बना देते हैं। तो ऐसे बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। फिर क्यों कहते हो कि भूल जाते हैं। कितना ऊंच ते ऊंच बाप है। उनसे ऊँचा कोई होता ही नहीं। मनुष्य कितना मुक्ति के लिये उपाय करते हैं। कितनी झूठ, ठगी लगी पड़ी है। महऋषि आदि का कितना नाम है। गवनर्मेन्ट 10/20 एक जमीन देते हैं। ऐसे नहीं कि गवर्मेन्ट कोई रीलिजस है। कोई धर्म को मानते ही नहीं। कहा जाता है रीलिजन इज़ माइट। क्रिश्चयन लोग में माईट थी ना। सारे भारत को हप कर गये थे। अभी भारत में कोई माईट है नहीं। कितना झगड़ा मारा–मारी लगी पड़ी है। वही भारत क्या था। बाप कैसे, कहां आते हैं किसको भी कुछ पता भी नहीं है। तुम जानते हो मगधदेश में आते हैं। जहां मगर मच्छ होते हैं। मनुष्य ऐसे हैं जो सभी कुछ खा जावें। सबसे जास्ती वैष्णव भारत था। यह वैष्ण राज्य है ना। कहां यह महान पवित्र देवताएं, कहां आजकल तो देखो क्या2 हप करते जाते हैं। जो आवे हप करते जावे। आदमखोर भी बन जाते हैं। भारत की क्या हालत हो गई है। अभी तुमको सारा राज़ समझा रहे हैं। ऊपर से लेकर नीचे तक पूरा ज्ञान देते हैं। सबसे पहले तुम्हीं इस पृथ्वी पर होते हो, फिर कैसे मनुष्य वृद्धि को पाते हैं। अभी तुम समझते हो 8 वर्ष के अन्दर हाहाकार हो जावेगा। हाय हाय करते रहेंगे। स्वर्ग में देखो कितना सुख है। यह एम ऑबजेक्ट की निशानी देखो। यह सभी तुम बच्चों को धारणा भी करनी है। कितनी बड़ी पढ़ाई है। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। माला का राज़ भी समझाया है ऊपर में फूल है शिवबाबा, फिर है मेरू। प्रवृत्ति मार्ग है ना। निवृतिमार्ग वालों को माला फेरने का हुकुम ही नहीं। यह है ही देवताओं की माला। बाप ने तुमको समझाया है इन्होंने कैसे राज्य लिया। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोई–2 हैं जो बेधर्म हो किसको समझावे आओ तो हम आपको ऐसी बात सुनाते हैं जो और कोई बता नहीं सकता है। सिवाय शिवबाबा के और कोई बता न सके। इन्हों को यह राजयोग किसने सिखाया। बहुत रसीला बैठ समझाना चाहिए। यह 84 जन्म कैसे लेते हैं। इन्हों का पिछाड़ी का जन्म कौन सा है। देवता सो क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। बाप कितनी सहज नालेज देते हैं और पवित्र भी बनना है तब ही ऊँच पद पावेंगे। सारे विश्व पर शान्ति स्थापन करने वाले तुम हो। तुमको बाप राज भाग देते हैं। दाता है ना। वह कुछ लेता नहीं हैं। तुम्हारी पढ़ाई की यह है पराइज(प्राइज़)। ऐसी प्राइज तो और कोई दे न सके। तो ऐसे बाप को प्यार से क्यों नहीं याद करते हो। लौकिक बाप को तो सारा दिन याद करते हो। पारलौकिक को क्यों नहीं याद करते हो। बाप ने बताया है युद्ध का मैदान है। टाइम लगता है। पावन बनने में इतना ही समय लगता है जब तक लड़ाई पूरी हो। ऐसे नहीं जो शुरू से आये हैं वह पूरे पावन होंगे। बाप समझाते हैं माया की लड़ाई बड़ी जोर से लगती है। अच्छे2 को माया जीत लेती है। इतनी तो बलवान है। जो गिरते हैं वह फिर मुरली भी कहां से सुने। सेन्टर में तो आते ही नहीं तो उनको कैसे पता पड़े। माया एकदम वर्थ नॉट ए पेनी बना देती है। मुरली जब पढ़े तब सुजाग हो। गंदे काम में लग जाते हैं। कोई सेन्सीबुल बच्चा हो जो उनको समझावे तुमने माया से कैसे हार खाई है। बाबा तुमको क्या बनाते थे फिर तुम कहां जा रहे हो। देखते हैं उनको माया खा रही है तो बचा लेने की कोशिश करनी चाहिए। कहां माया सारा हप न कर लेवे। फिर से सुजाग हो जावे। यह तो जानते हैं फिर ऊंच पद नहीं पावेंगे। गाया जाता है सद्गुरु के निन्दा करने वाले ठौर न पावे। न गिरे तो ठौर पा सकते हैं। बच्चे जानते हैं कैसे गिरते हैं। उनके साथी भी जानते हैं। किसको गिरा हुआ देखते हैं तो रहम आना

चाहिए। इनको माया से बचा लेवें। बाप कितना ऊंच बनाने आये हैं। इस समय सभी माया रूपी रावण के पेट में पड़े हैं। बाप निकालने आये हैं। कितना समय लगता है निकालने में। जैसे कोई डूबता है तो उनको बचाना होता है ना। हमको सिखलाने वाला डूब पड़ा है। माया ने पकड़ लिया है ड्रामा प्लैन अनुसार। खुश होकर उनका साथी नहीं बनना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए बचाने की। कितना भी डिससर्विस कर माया के वश हो जाये फिर तुम रहम दिल बाप के बच्चे हो तो रहम दिल बन माया से बचा लेना चाहिए। यह भी समझाया बाप कितना ऊँच तुम बच्चों को ले जाते हैं। तुम्हारा घर कितना माईल ऊपर में है। बता सकेंगे? वह तो हिसाब निकालते हैं ना इतने मिलियन माई एक घंटे में जाते हैं। अभी वह तो तुम्हारे काम की चीज़ नहीं। तुम कितना ऊपर जाते हो। अनगिनत। तुम्हारा सभी कुछ अनगिनत है। धन भी बाबा अनगिनत देते हैं। बच्चों को पुरूषार्थ करना चाहिए। ठंडा न बनना चाहिए। समझते भी हो बाबा हमको बहुत ऊँच ले जाते हैं। यहां खुश होते हैं बाहर जाने से फिर एकदम गुम हो जाते हैं। यहां तो तुमको कोई फुर्ना आदि भी नहीं। बाहर में रहने से तुम इतनी धारणा नहीं कर सकते हो। बुद्धि घर–वार तरफ भटकती रहेगी। घर भी खिटपिट चलती है। कोई युगल आते हैं। अगर एक आते हैं दूसरा नहीं आते हैं तो हंगामा हो जाता है। यहां तुम सभी खिटपिट से दूर बैठे हो। तो अच्छी रीत धारणा करनी चाहिए। खुशी से आना चाहिए। कई तो यहां जैसे लाचार से आते हैं। नम्बरवार तो होते ही हैं। तो यहां तुमको बहुत अच्छा टाइम है। बाहर में तो बच्चों का हंगामा, नौकरी का हंगामा। उन विचारों में ही बाप को भूल जाते हैं। बाप को तो नहीं भूलो ना। कितना ऊंच तुमको पढ़ाते हैं। तुम जिससे 21 जन्म लिये प्रारब्ध पाते हो। वह क्या करते हैं, कौन उनको पढ़ाते हैं। तुमको कौन पढ़ाते हैं। कितना फर्क है। उस किनारे है रावण राज्य, इस किनारे है राम राज्य। तुमको समझाया जाता है कलियुग को भी याद न करो। तुम तो अभी संगम युग पर बैठे हो। तो नई दुनियां को ही याद करो। यह है वेश्यालय। जैसे किकुंआ है। कोई गिरता है तो टुकड़ा2 हो जाता है। इसलिये इनको रौरव नर्क कहा जाता है। नाम देखो कितना कड़ा है। नांग–बलाएँ, बिच्छू–टिण्डन रहते हैं। शास्त्रों में लिखा है शंकर पार्वती पर फिदा हुआ। वीर्य गिरा उनसे बिच्छू–टिण्डण पैदा हुये। अभी शंकर आदि की तो बात ही नहीं। बाप समझाते हैं इस समय सभी बिच्छू–टिन्डण ही पैदा होते हैं जो डंसते, मारते रहते हैं। शास्त्रों में फिर चर्याई लिख दी है। सूक्ष्मवतन में फिर यह बातें कैसे हो सकती हैं। शंकर फिदा हुआ सूक्ष्मवतन में। बिच्छू–टिन्डण फिर यहां निकले। कहते हैं शास्त्र व्यास भगवान ने लिखी है। जब व्यास भगवान ही ऐसी2 बातें बनाते हैं तो मनुष्य क्या नहीं बनाते होंगे। बाप कहते हैं तुम बच्चे बहुत बहुत भाग्यशाली हो। आज तुम साहब जादे हो कल शाहजादे बनने वाले हो। आज साहबजादे नर्कवासी, कल शाहजादे स्वर्गवासी। सारे विश्व के मालिक होंगे। तो ऐसे बाप को कितना अन्दर में याद करना चाहिए। विचार–सागर–मंथन कर प्वाइंट्स आदि निकालनी है। याद करनी है। .... दूसरों को भी समझाना है। गुल गुल भी बनना है। बाप कहते हैं काँटों से फर्स्ट क्लास फूल बनो। फूलों (में) भी अनेक प्रकार के होते हैं तो काँटों में भी अनेक प्रकार के होते हैं। बाप खुद बच्चों की अवस्था देखते हैं। तो समझते हैं यह बिचारे क्या बनेंगे। अपनी अवस्था को हरेक जान सकते हैं। हम बाबा क्या सेवा करते हैं। बाबा को प्यार करते हैं? शिवबाबा कहते हैं हे रूहानी बच्चों मुझ बाप को मामेकं याद करो। देहधारी को याद न करो। इन द्वारा बाप समझाते हैं। तो यह भी याद आता है। यह शरीर न होता तो फिर शिवबाबा होता क्या। रथ की बलिहारी गाई जाती है। रथ भी पढ़ते हैं ना। स्कूल में मॉनिटर का रिगार्ड भी रखेंगे ना। बड़े टीचर का छोटे टीचर रिगार्ड तो रखेंगे ना। कई तो यह भी समझते नहीं हैं। यह है दुःखधाम। वह है सुखधाम। वहां लाइफ बड़ी और पवित्र रहती है। यहां लाइफ कम और अपवित्र है। पद का भी कितना फर्क पड़ जाता है। कहां राव और कहां रंक! वह पावन यह पतित। तो पावन बनना चाहिए ना। कोई भी विचार–सागर–मंथन नहीं करते हैं, नहीं तो बच्चों को विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग।